International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 3; March 2016; Page No. 479-481

मनोज सोनकर कृत 'आत्म कथ्य' में व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति

नीलम

रिसर्च विद्वान, लवली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी, फागवारा, पंजाब, भारत।

प्रस्तावना

व्यंग्यकार की प्रखर संवेदनशीलता समूह के दिमाग को खोलने और हृदय को फैलाने का काम एक साथ करती है, इसलिए व्यंग्यकार को भावुक नहीं संवेदनशील बनना पड़ता है। उसका मूल लक्ष्य उत्तेजित करना है, कुठाराघात द्वारा आँखें खोलना है। व्यंग्य की विराटता और पौरूष ने लगातार आश्वस्त किया है।

डॉ० धनंजय वर्मा ने व्यंग्य को परिभाषित करते हुए लिखा है:- ''सच्चे और सार्थक व्यंग्य की यह ताकत होती है कि वह मूल्यों की आपाधापी और संक्रान्ति का चित्र ही नहीं देता, नए मूल्यों की तलाश और उनकी ओर इशारा भी करता है।''[१]

डॉ० छविनाथ मिश्र ने व्यंग्य की परिभाषा देते हुए लिखा है - ''न केवल इसने लोक दावपेच को समझने की नई दृष्टि और व्यवहार की कुशलता ही दी है, अपितु वस्तु - स्थिति की प्रखर और सूक्ष्मतम अनुभूति द्वारा जीवन को नई दिशा भी दी है। यह परिणाम उसी का है कि हम अब अधिक समझदार हुए हैं [२]।

जिस तीव्र सामाजिक राजनीतिक सांस्कृतिक बाध्यता ने व्यंग्य लेखन को सघन किया हैं वहीं आध्यता व्यंग्य विधा के अधतन विकास का कारण भी है। कोई भी व्यंग्य लेख पाठक को किसी हल्के-फुल्के वातावरण में नहीं ले जाता, अपितु कुछ सोचने के लिए विवश करता है। किस्सागोई से मुक्त धारदार व्यंग्य लेखन की विकास-यात्रा का सर्वेक्षण क्रमशः देता है। यदपि हमें व्यंग्य विधा का प्रारंभिक भारतेंदु हरिशचन्द्र को स्वीकार करना पड़ेगा।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने ब्रिटिश शासन की लालची और लुटेरे चरित्र को अंग्रेज स्त्रोत में व्यंग्यात्मक रूप से खुली अभिव्यक्ति दी है :-

''खजाना तुम्हारा पेट है, लालच तुम्हारी क्षुधा है, सेना तुम्हारा चरण है, खिताब तुम्हारा प्रसाद है, अतएव है विराट रूप अंग्रेज ! हम तुमको प्रणाम करते हैं'[३]।

हरिशंकर परसाई ने 'अपनी-अपनी बिमारी ' नामक रचना में व्यंग्य की परिभाषा इस रूप में दी है :-

''जो नहीं है उसे खोज लेना शोधकर्ता का काम हैं, काम जिस तरह होना चाहिए उस तरह न होने देने विशेषज्ञ का काम है, जिस बीमारी से आदमी मर रहा है उससे उसे न मरने देकर दूसरी बीमारी से मार डालना डाक्टर का काम है, अगर जनता सही रास्ते पर जा रही है, तो उसे गलत रास्ते पर ले जाना नेता का काम है, ऐसा पढ़ाना कि छात्र बाजार में सबसे अच्छे नोट्स की खोज में स्वयं ही जाएँ, प्रोफेसर का काम है'।[४]

मानव प्रकृति जिसमें सुमति और कुमति है। सुमति से संस्कृति का विकास होता है तथा कुमति से विकृति का। व्यंग्य सुमति के हाथ का अंकुश है, जो कुमती के उदद्ण्ड विकारों से उत्पन्न अमंगल को मिटाकर सुमति से प्रस्तुत सुमंगल का मार्ग प्रशस्त करता है। व्यंग्य अमंगलकारी पहले है और मंगल - भवन बाद में। व्यंग्य सुधार थोपने के पक्ष में नहीं है। व्यंग्य का विश्वास विकारों को मार भगाने में है।

प्राचीन आचार्यो भरतमुनि, विश्वनाथ, मम्मट, पंडितराज जगन्नाथ, वामन, धनंजय, आदि ने हास्य का अनुशीलन एवं परिशीलन तो किया परंतु यह प्रयत्न व्यंजना के इर्द - गिर्द घूमता रहा है। व्यंग्य पर स्वतंत्र रूप से किसी भी आचार्य ने नहीं लिखा है। व्यंग्य और व्यंजना दोनों शब्द 'विू' धातू से व्युत्पन्न है।' अन्जु व्यक्ति भ्रमण कान्ति गतिबु' यहाँ व्यक्ति से तात्पर्य है विशिष्ट विवेचन। व्यंजना एक शब्द अर्थ है जिसका अर्थ व्यंजित करना होता है। इस अभिप्रेत अर्थ को स्पष्ट करने वाले शब्द को 'व्यंजक' तथा ऐसे अर्थ को 'व्यंगार्थ' कहा जाता है। इस प्रकार किसी कथन का अप्रत्यक्ष रीति से अर्थ ग्रहण किया जाता है। व्यंग्य शब्द का अर्थ है - ब्याज से किसी व्यक्ति अथवा वस्तु पर छींटाकसी करना। इस प्रकार व्यंग्य अर्थगत भंगिमा की वह व्यंजक अभिव्यक्ति हो जो वक्रता और चुटीलेपन के द्वारा सामाजिक विकृतियों पर प्रहार करके सामाजिक जीवन को सही दिशा प्रदान करता है।

समाज प्राचीन काल से ही दो वर्गों में विभक्त रहा है एक तो शोषक वर्ग तथा दूसरा शोषित वर्ग। यह अंतर हमेशा से ही अर्थ के कारण रहा है। जो व्यक्ति अमीर होता है वह गरीब लोगों का शोषण करता है। जब आर्थिक परिस्थितियों के आधार पर शोषण की सीमाएं पार जो जाति है या आर्थिक परिस्थितियां समाज में असंतुलन पैदा करती है तो एक क्रान्तिकारी लेखक अपनी लेखनी के माध्यम से समाज पर प्रहार करता है। इसका परिणाम यह होता है कि सामान्य वर्ग भी शोषित वर्ग के साथ मिलकर अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाते हैं तथा समाज आर्थिक समानता लाने का अथक प्रयास करते हैं। मनोज सोनकर एक क्रान्तिकारी व्यंग्य लेखक है जो समाज की प्रत्येक परिस्थिति का सूक्ष्म अवलोकन करते है तथा समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता को उजागर करने का प्रयास करते हैं।

'खूब अच्छी तरह से जोत। इस बार ऊख की फसल बहुत जोरदार होनी चाहिए। पिछली साल की फसल से भी बढ़िया होनी चाहिए। तू तो पूरे जिले में बढ़िया ऊख उगाने के लिए मशहूर है। इस बार भी बढ़िया ही उगा। ये ले गमछा! सिर ढक ले। उन्होंने फटा हुआ गमछा मेरी तरफ फैंका है। मैनें उसे लोक कर सिर ढक लिया है। मेरा पलटू इस्कूल जा रहा है....।

'बहुत तेज बरखा पड़ रही है। बादर गरज रहे हैं; बिजुरी चमक रही है। मैं गौरूओं के लिए चारे का बड़ा गट्ठर लेकर मलिकार के दुआरे पहुँचा हूँ। चारा गोउओं को डालकर मैं थरथर काँप रहा हूँ। यह ले छतरी! उन्होंने मेरी तरफ एक

फटही छतरी फेंका है। मैं उसे लोक कर, ओढ़कर मड़ई की तरफ चला हूँ। मेरा पलटू कालेज जा रहा है...[५]।
आजकल बड़े लोग शॉपिंग माल से भी चीजें खरीद रहे हैं। शॉपिंग माल हर चीज बेच रहे हैं। कार से लेकर बैंगन, टमाटर, धनिया और मिर्ची तक बेच रहे हैं।

'सच कह रहे हैं आप?
बिलकुल सच।

गरीबों के पेट पर लात मारने वाला यह सोपिंग माला (शॉपिंग माल) तो एकदम नया दुश्मन है। बहुत ही खतरनाक दुश्मन है। मैं मन ही मन बुदबुदाया हूँ। पहरेदार ने मेरी टोकरी में से दो बैंगन और चार टमाटर मुस्कुरा कर उठा लिए हैं [६]।
आर्थिक विषमता के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए लेखक का मत है-'मेरा नाम जुम्मन उर्फ काना है। मेरी एक आँख बड़ी और दूसरी छोटी है। कद लम्बा है; लेकिन ज़िस्म हड्डियों का ढ़ाचा है। ओठ फटे मोटे हैं; दाँत पीले और बड़े हैं। बाल काले और लम्बे हैं; रंग साँवला है। मेरा पायजामा अकसर फटा रहता है, इसलिए लम्बी कमीज पहनने के लिए मजबूर हूँ। कभी-कभी मेरे छोटे भाई मेरा पायजामा पहन लेते हैं। तब मैं हाफ पेन्ट पहनकर भी बाहर निकला पड़ता हूँ। अब्बा का इंतेकाल हो चुका है; अम्मा बेवा और बुढ़िया हैं। मेरे पांच छोटे भाई और एक बहन है। मैं गली-गली घूमकर गुब्बारे बेचता हूँ और अम्मी गुदड़ी-रजाई सीती हैं। मेरे भाई-बहन कभी-कभी पतंग और मांझा बनाते हैं; कभी-कभी कपड़े भी रंगते हैं। किसी तरह से दाल-रोटी चलती है। जब कभी भाई बहन एक बार भर पेट खाना खा लेते हैं। तब दूसरी बार खाने के लिए कुछ नहीं बचता है। मैनें उन्हें कई बार समझाया है, कि थोड़ा-थोड़ा खाओ! और दोनों वक्त खाओ! लेकिन समझते ही नहीं है। सबके सब अहमक हैं। कभी न कभी पेट भर खाने की गलती कर ही बैठते हैं। ईद के दिन भी मेरा परिवार अच्छे खाने और कपड़े के लिए तरसता है [७]।
लेखक ने हमारे नेताओं, उद्योग पतियों और अन्य वर्गो के द्वारा हो रहे शोषण पर व्यंग्य का तीक्ष्ण प्रहार किया है।
आर्थिक परिस्थितियां किस प्रकार से एक साधारण व्यक्ति को किस प्रकार प्रभावित करती है। इसका ज्वलंत उदाहरण लेखक नें व्यक्त किया है।
'पहले देश में मंहगाई नये पैसे में बढ़ती थी अतः वह नहीं चाहिए आज वह रूपयों में बढ़ रही है फिर भी चाहिए। वेसै मंहगाई तो आम जनता को नहीं चाहिए , लेकिन दलालों तथा व्यापारियों ने उसकी प्रगति के लिए स्तरगत योगदान दिया है। पीने का स्वच्छ जल नहीं, पैट्रोल डीजल के लिए पानी जैसे पैसा बह रहा है , सोना गिरवी रखा जा रहा है , खून बह रहा है और पानी के लिए हमें यह सब नहीं चाहिए।
यहाँ पर लेखक ने स्पष्ट रूप से उद्योगपतियों पर व्यंग्य कसते हुए कहा है कि किस प्रकार ये लोग महंगाई को अति प्रिय मानते हैं क्योंकि इस प्रक्रिया से इनकी चांदी होती है तथा गरीब व्यक्ति और अधिक दुविधा में फंस जाता है।'
इसको व्यक्त करने का प्रयास करते हुए यह दर्शाया है कि बीच खाई इतनी बड़ी है कि इसे पाटना अत्यंत कठिन है।
लेखक प्राचीन काल तथा आधुनिक काल में अमीर शब्द की व्याख्या को व्यक्त करने का प्रयास किया है।
आर्यकाल में व्यक्ति तथा परिवार की अमीरी, महानता, ऐश्वर्य पैसों से नहीं गिना जाता था। प्राचीन काल में परिवार की समृद्धि का प्रतीक गोधन था। जिसके पास जितनी गौएं थी वह उतना अमीर समझा जाता था। आज वैज्ञानिक प्रगति के कारण अमीरी का लक्षण नोटों से गिना जा रहा है।
मनोज सोनकर ने आलोच्य ग्रन्थ' ''आत्म कथ्य'' में भ्रष्टाचार को समाज के नाश का सबसे मूल कारण स्वीकार किया है। ब्रिटीश शासन लम्बे समय तक भारतीयों का शोषण करते रहे। देश के क्रान्ति वीरों और देश भक्तों को आजाद करवाया ताकि इस देश में भाईचारा , अमन , शांति , खुशहाली होगी किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे अपने ही भाई भारतीय अफसर जनता को लूटने और कोसने में लग गए। मंत्री से लेकर चपड़ासी तक प्रत्येक कर्मचारी ने भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी के दल-दल को इतना विस्तृत रूप प्रदान किया है कि इसका दायरा बढ़ता ही चला गया और आज भी इसकी शक्ति इतनी बढ़ चुकी है कि इसे जड़ से समाप्त कर पाना असंभव सा प्रतीत होने लगा है। हमारे नेता इतने भ्रष्ट हो चुके है कि संसद में सवाल पूछने के भी पैसे लेने लगे हैं। जिनको जनता की सेवा के लिए नियुक्त किया जाता है वे ही जनता को सेवक बना लेते हैं। भ्रष्टाचार ने हमारे देश में जड़ें इतनी गहरी फैला रखी हैं कि इसको उखाड़ पाना असंभव सा प्रतीत होता है। नेता से लेकर चपड़ासी तक, शिक्षक से लेकर बड़े सरकारी अफसर तक प्रत्येक जगह पैसों की माया चलती है और पैसों की ही बोली समझी जाती है। इन उदाहरणों को व्यक्त करके लेखक ने भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है।
उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट है कि प्राचीन तथा आधुनिक मान्यताओं में दिन रात का अंतर है। पहले व्यक्ति अमीर अपने सम्मान और व्यक्तित्व के कारण माना जाता या परंतु आज जिसके पास जितना पैसा है वह व्यक्ति उतना ही अमीर है चाहे वह कितना ही नालायक हो लेकिन उसके पास नोटों का बंड़ल होना आवश्यक है।
लेखक ने जिसके पास बहुत पैसे हैं वही अमीर नहीं, अमीरी अनेक प्रकार से तौली जाती है - धन से ,विचारों से, कर्मों से, कपड़ों से , मकानों से , अत्याचार से , सत्ता से , कुर्सी से, पदों से , बच्चों से , भोजन से , भ्रष्टाचार से , अन्याय आदि से। अमीर दो प्रकार के होते हैं - गोरे और काले। परिश्रम से , प्रतिभा से जो धन इकट्ठा करते हैं वो गोरे , और काले कारनामों से जो पैसा बटोरते हैं वे काले। व्यवहार में गोरे के बजाय काले अधिक दिखाई देते हैं। अमीर का सगा भाई गरीब है , अमीर ने उसका गला बंद करने के लिए उसे तिहाड़ जेल में बंद कर दिया।
यहाँ लेखक ने अमीर की परिभाषा दी है कि जिसके पास जमीर ना हो
अर्थात जिसके पास पैसा हो और बेईमानी हो वही अमीर कहला सकता है। उसने चाहे पैसा गरीबों का खून चूसकर इकट्ठा किया हो।
लेखक ने अपने व्यंग्य के बाणों को शोषण वर्ग पर चलाया है कि किस प्रकार के समाज में गरीबी , शोषण व असंतोष फैलाते हैं तथा किस प्रकार की परिस्थितियां
उत्पन्न करके वे समाज में आर्थिक स्तर पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास करते हैं।
सांस्कृतिक मूल्यों के पतन पर व्यंग्य
भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से ही विश्व विख्यात रही है। यहाँ के रहन-सहन , खान-पान , रीति -रिवाज , नैतिक - मूल्य , संस्कार , तीज त्यौहार आदि आज तक जीवित हैं तथा अब भी उनमें उतना ही उत्साह व्याप्त है। परंतु आधुनिकता की दौड़ में आज का मनुष्य संस्कृति के रूप को विकृत करने का प्रयास की रहा है। वह अपनी संस्कृति को

छोड़कर पाश्चातय संस्कृति के रंग में रंगने का प्रयास करने लगा है। मनोज सोनकर ने आलोच्य ग्रन्थ' ''आत्म कथ्य'' के माध्यम से भारतीय संस्कृति में परिवर्तित मूल्यों और परम्पराओं पर करारा व्यंग्य किया है।

'रमलीला जम कर करवाता हूँ। पहिले रमलीला में खूब भीड़ आती थी; अब भीड़ कम होने लगी है। भीड़ बढ़ाने के लिए अब रमलीला के साथ नवटंकी भी चिकाऊँगा। बिरहा में अभी भी भीड़ काफी होती है।

कुसती परतीयोगिता भी खूब करकता हूँ और पुरसकार भी खूब बँटवाता हूँ। अपने सरगवासी नाना को गामा को दोस्त बताता हूँ। कबड्डी परतीयोगिता में मेरा गांव हमेसा जीतता आया है। फसट पराइज भी पाता आया है। सतनरायन की कथी बरस में दो बार करवाता हूँ और कथा के बाद लोगों को भर पेट खाना भी खिलाता हूँ। मउका ताक-ताक कर लोगों में धोती, कुरता, लोटा, थाली, झुल्ला लुग्गा और कंबल भी बंटवाता हूँ।[८]

लेखक मनोज सोनकर ने आलोच्य ग्रन्थ' ''आत्म कथ्य'' के माध्यम से समाज की विभिन्न संस्कृतियों का विवेचन करते हुए व्यक्त करने का प्रयास किया है कि हमारी भारतीय संस्कृति पहले भी महान थी और अब भी है। विदेशों में शादी मात्र एक ढकोसला मात्र है जबकि भारत में आज भी इसे सात जन्मों का बंधन स्वीकार किया जाता है। लेखक ने भारतीय संस्कृति का परिचय दिया है तथा साथ ही आधुनिक युग में स्त्रियों की सोच तथा उनकी मानसिकता का वर्णन करने का प्रयास किया है जो हमारी प्राचीन संस्कृति को केवल बोझ मात्र समझते हैं। पाश्चात्य प्रभाव से खण्डित सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए लेखक का मत देखिए-

'सबसे पहले फिल्मी गानों का कार्यक्रम शुरू हुआ है। एक काले-कलूटे, मोटे-झोटे लड़के ने झूम-झूम कर गाया है।

> चुम्मा! चुम्मा! दे दो चुम्मा!
> जुम्मा! जुम्मा! दे दो चुम्मा!.....
> तालियां गूंजी हैं और खूब गूंजी हैं।

इस भैंसे को तो पगली भी चुम्मा नहीं देगी। एक प्रोफैसर फुसफुसाए हैं।

> सजी-धजी खूबसूरत छात्रा का नशीला सुर गूँजा है।
> चोली के पीछे क्या है।
> चोली के पीछे क्या है।.....
> तालियाँ पटाकों की लड़ी की तरह फूटी हैं और खूब

फूटी हैं। सीटियाँ बजी हैं और खूब बजी हैं। वन्स मोर वन्स मोर! पूरा हाल नशे में डूब गया है।

'ब्लाइन्ड स्टुडेन्ट' की 'मोनोएक्टिंग खूब सराही गई है।

मैं मार्डन हरिश्चन्द्र हूँ। एक सत्य बोलने का एक हजार लेता हूँ। जो दर्जन भर सत्य बुलवाते हैं; उनसे सिर्फ ग्यारह हजार ही लेता हूँ। 'हरिश्चन्द्र- ड्रामे का यह संवाद मुझे झकझोर गया ह[९]।

लेखक ने भारतीय संस्कृति में दान के महत्व को दर्शाते हुए बताया है कि दान देने से हमारा मान -सम्मान तो बढ़ता ही है साथ ही मानसिक शांति भी मिलती है लेकिन कुछ लोग दान की महिमा का बखान किए बिना नहीं रह पाते। जब तक वे सभी को बता न दे उनके मन से दान की राशि का मूल्य प्राप्त नहीं होता।

'भारतीय संस्कृति में इनकी बहुत महिमा है। विश्वामित्र, ब्रह्मचारी, सदाचारी, आचार्य रजनीश आदि महान् ऋषि थे , जो काफी गरीब तथा समाज की चिंता से पीड़ित थे। मानव कल्याण हेतु इनके पास रायफल, विमान , जर, जमीन, मारूति, जिप्सी आदि है। सुवर्ण कमंडल भी है , जिसे वे सुरक्षा के लिए स्विस बैंक में रखते है। अगर जीवन के प्रति वे उकता गए तो मनोरंजन हेतु राजनीति में शरीक होते हैं। प्रस्तुत वर्ष नाशिक के कुंभमेला में ऐसे अनेक ऋषि उर्वशी जनता को देखने को मिले है। लेखक ने पाश्चात्य संस्कृति पर कटाक्ष करते हुए कहा है कि हमारी संस्कृति इसलिए भी श्रेष्ठ है कि इसमें कमियां होते हुए भी यह सभी को आकिर्षत करती है।

संदर्भ

1. नई कहानियाँ मार्च ६९ , पृ० ११७।
2. डॉ०. छविनाथ मिश्रः आधुनिक व्यंग्य का स्त्रोत और स्वरूप, पृ० ११।
3. ब्रजरत्नदास (सम्पादित)ः भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग.३ पृ० ८५८।
4. हरिशंकर परसाईः अपनी - अपनी बीमारी , पृ० ७६।
5. मनोज सोनकरःआत्म कथ्य पृ० २२ ।
6. मनोज सोनकरःआत्म कथ्य पृ० ६४ ।
7. मनोज सोनकरःआत्म कथ्य पृ० ६५ ।
8. मनोज सोनकरःआत्म कथ्य पृ० ४० ।
9. मनोज सोनकरःआत्म कथ्य पृ० ८७ ।